डा. राजीव कुमार,
इतिहास विभाग,
एच.डी.जैन कॉलेज, आरा.

Topic - "1930 के दशक की आर्थिक महामंदी का प्रभाव "

भूमिका (Introduction):

1930 के दशक की आर्थिक महामंदी, जिसे सामान्यतः महामंदी (Great Depression) कहा जाता है, आधुनिक विश्व इतिहास की सबसे गंभीर आर्थिक संकटों में से एक थी। इसका आरंभ अक्टूबर 1929 के वॉल स्ट्रीट शेयर बाजार पतन से हुआ और शीघ्र ही यह संकट अमेरिका से यूरोप, एशिया, लैटिन अमेरिका तथा औपनिवेशिक देशों तक फैल गया। इस महामंदी ने वैश्विक व्यापार को नष्ट कर दिया, औद्योगिक उत्पादन ठप कर दिया, बेरोजगारी को अभूतपूर्व स्तर तक पहुँचा दिया और विश्व की राजनीतिक एवं सामाजिक संरचना को गहराई से प्रभावित किया। इस संकट के परिणामस्वरूप ही विश्व द्वितीय विश्व युद्ध की ओर अग्रसर हुआ।

महामंदी का कारण :

यद्यपि प्रश्न प्रभाव से संबंधित है, फिर भी कारणों का संक्षेप में उल्लेख आवश्यक है—
1.औद्योगिक और कृषि क्षेत्र में अतिउत्पादन,
2.आय और संपत्ति का असमान वितरण,
3.शेयर बाजार में अत्यधिक सट्टेबाज़ी,
4.कमजोर बैंकिंग व्यवस्था,
5.अंतरराष्ट्रीय ऋण एवं व्यापार पर निर्भरता,
6.प्रथम विश्व युद्ध के बाद अस्थिर आर्थिक व्यवस्था।

आर्थिक प्रभाव:

---

1. औद्योगिक उत्पादन में भारी गिरावट:
महामंदी के कारण विश्व भर में औद्योगिक उत्पादन बुरी तरह गिर गया—
अमेरिका में 1932 तक औद्योगिक उत्पादन लगभग 50% घट गया।
जर्मनी में यह गिरावट 40% से अधिक थी।
लोहा, कोयला, वस्त्र, मोटर वाहन उद्योग सबसे अधिक प्रभावित हुए।
हजारों कारखाने बंद हो गए और पूँजी निवेश लगभग समाप्त हो गया।

2. व्यापक बेरोजगारी:
महामंदी का सबसे गंभीर प्रभाव बेरोजगारी था—
अमेरिका में लगभग 2.5 करोड़ लोग बेरोजगार हो गए।
जर्मनी में 60 लाख से अधिक लोग बेरोजगार थे।
ब्रिटेन में लगभग 30 लाख लोग बेरोजगार थे।
बेरोजगारी ने समाज में भुखमरी, अपराध और असंतोष को जन्म दिया।

3. कृषि संकट:
कृषि क्षेत्र भी बुरी तरह प्रभावित हुआ—
कृषि उत्पादों की कीमतों में भारी गिरावट,
किसानों पर कर्ज का बोझ बढ़ा,
भूमि नीलामी और किसानों की आत्महत्या की घटनाएँ बढ़ीं,
अमेरिका में डस्ट बाउल (Dust Bowl) ने स्थिति को और गंभीर बना दिया।

4. अंतरराष्ट्रीय व्यापार का पतन:
1929 से 1933 के बीच विश्व व्यापार लगभग दो-तिहाई घट गया—
देशों ने संरक्षणवादी नीतियाँ अपनाईं,
ऊँचे आयात शुल्क लगाए गए (जैसे स्मूट-हॉली टैरिफ),
अंतरराष्ट्रीय मुद्रा व्यवस्था विफल हो गई,
इससे आर्थिक राष्ट्रवाद को बढ़ावा मिला।

5. बैंकिंग और वित्तीय संकट
हजारों बैंक दिवालिया हो गए,
आम जनता की जीवन भर की बचत नष्ट हो गई,
ऋण व्यवस्था ठप हो गईं,
इससे वित्तीय संस्थानों पर से जनता का विश्वास उठ गया।

सामाजिक प्रभाव :
---
1. गरीबी और जीवन स्तर में गिरावट :
महामंदी ने समाज को व्यापक गरीबी में धकेल दिया—
कुपोषण और बीमारियाँ बढ़ीं,
झुग्गी बस्तियाँ (Hoovervilles) उभरीं,
बाल श्रम और स्कूल छोड़ने की प्रवृत्ति बढ़ी,
मध्यम वर्ग भी तेजी से नीचे गिरा।

2. मानसिक और नैतिक प्रभाव
बेरोजगारों में आत्मसम्मान की हानि,
पारिवारिक तनाव और सामाजिक अस्थिरता,
शराबखोरी और अपराध में वृद्धि,
समाज में निराशा और असुरक्षा का वातावरण बन गया।

3. महिलाओं और परिवार पर प्रभाव :
महिलाओं को कम वेतन पर काम करना पड़ा,
पारंपरिक पारिवारिक भूमिकाएँ प्रभावित हुईं,
विवाह और जन्म दर में गिरावट आई,
महिलाएँ घरेलू और अनौपचारिक अर्थव्यवस्था में अधिक सक्रिय हुईं।

राजनीतिक प्रभाव :
---
1. तानाशाही और उग्रवाद का उदय :
महामंदी ने लोकतंत्र में जनता का विश्वास कमजोर कर दिया—
जर्मनी में नाज़ी पार्टी सत्ता में आई (1933),
इटली में फासीवाद मजबूत हुआ,
जापान में सैन्यवाद बढ़ा,
लोग स्थिरता और रोजगार के नाम पर तानाशाही को स्वीकार करने लगे।

2. उदार लोकतंत्र का पतन :
संसदीय सरकारें असफल सिद्ध हुई,
सरकारें बार-बार बदलीं,
आपातकालीन कानूनों का प्रयोग बढ़ा,
लोकतंत्र को कमजोर माना जाने लगा।

3. राज्य हस्तक्षेप का विस्तार :
laissez-faire नीति का अंत,
सरकार द्वारा रोजगार योजनाएँ,
कल्याणकारी राज्य की अवधारणा का विकास,
राज्य की भूमिका अर्थव्यवस्था में निर्णायक हो गई।

विभिन्न देशों पर प्रभाव :
---
1. संयुक्त राज्य अमेरिका :
राष्ट्रपति फ्रैंकलिन डी. रूज़वेल्ट की न्यू डील नीति,

बैंक सुधार, सामाजिक सुरक्षा, सार्वजनिक निर्माण कार्य
श्रमिक अधिकारों को मजबूती।

2. जर्मनी
भीषण बेरोजगारी और असंतोष,
वाइमर गणराज्य का पतन,
हिटलर और नाज़ीवाद का उदय।

3. ब्रिटेन
प्रभाव अपेक्षाकृत कम,
औद्योगिक क्षेत्रों में बेरोजगारी,
साम्राज्यवादी व्यापार और पुनःशस्त्रीकरण से सुधार।

4. सोवियत संघ
योजनाबद्ध अर्थव्यवस्था के कारण कम प्रभाव,
पूँजीवाद के विरुद्ध प्रचार,
पंचवर्षीय योजनाओं का विस्तार।

5. औपनिवेशिक देश
कच्चे माल की कीमतों में गिरावट,
औपनिवेशिक शोषण में वृद्धि,
राष्ट्रवादी आंदोलनों को बल (भारत, अफ्रीका),
अंतरराष्ट्रीय संबंधों पर प्रभाव।

1. अंतरराष्ट्रीय सहयोग का पतन :

राष्ट्र संघ की असफलता,
मुद्रा अवमूल्यन की प्रतिस्पर्धा,
आर्थिक प्रतिस्पर्धा में वृद्धि।

2. द्वितीय विश्व युद्ध की भूमिका :

आर्थिक राष्ट्रवाद ने विस्तारवाद को जन्म दिया।
जर्मनी, इटली, जापान की आक्रामक नीतियाँ,
युद्ध की तैयारी से रोजगार सृजन,
महामंदी ने युद्ध की पृष्ठभूमि तैयार की।

दीर्घकालीन प्रभाव :

कीन्सीय अर्थशास्त्र की स्वीकृति,
कल्याणकारी राज्य की स्थापना,
वित्तीय संस्थानों का सुदृढ़ नियमन,
आर्थिक स्थिरता में सरकार की भूमिका,
भविष्य के आर्थिक संकटों से निपटने की सीख।

निष्कर्ष (Conclusion) :

1930 के दशक की आर्थिक महामंदी केवल एक आर्थिक संकट नहीं थी, बल्कि यह वैश्विक सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन का कारण बनी। इसने पूँजीवादी व्यवस्था की कमजोरियों को उजागर किया, तानाशाही शक्तियों को जन्म दिया और अंततः विश्व को द्वितीय विश्व युद्ध की ओर धकेल दिया। साथ ही, इस संकट ने सरकारों को आर्थिक नियोजन, सामाजिक सुरक्षा और कल्याणकारी नीतियों को अपनाने के लिए विवश किया। आज भी वैश्विक आर्थिक नीतियों पर महामंदी के अनुभवों की गहरी छाप दिखाई देती है।